Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

दैनिक

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 2 अंक: 199 , 25 दिसम्बर, सोमवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक मो. 9879141480

4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

तिहाड़ जेल में कैदी ने फंदा लगा दी जान

नई दिल्ली। दिल्ली के पश्चिमी जिले के हरिनगर थाना इलाके स्थित तिहाड़ जेल में एक कैदी ने खुद को फांसी लगा ली है। घटना शनिवार को जेल संख्या पांच में घटी है। घटना की जानकारी पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम के लिए पास के डीडीयू अस्पताल के शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया है। पुलिस को फ्लिहाल घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। इस बाबत मामला दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। वहीं पुलिस अधिकारी इस बात की भी जांच कर रहे हैं कि जेल में इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद भी ऐसी घटना कैसे घटी ?पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक, घटना शनिवार की दोपहर करीब तीन बजे की है। इस दौरान स्थानीय पुलिस को सूचना मिली कि तिहाड़ जेल संख्या पांच में एक कैदी ने खुद को फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली है। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने पाया कि एक कैदी पतले कंबल का फंदा बनाकर जेल की रेलिंग के सहारे लटका हुआ है। पुलिस ने मृतक कैदी की पहचान खैबर बाईपास निवासी सोनीराम (21) के रूप में की है जिसे कश्मीरी गेट थाना पुलिस ने लूटपाट के एक मामले में गिरफ्तार किया था। मामले की शुरुआती जांच के बाद पता चला कि आरोपी जनवरी 2017 से ही जेल में बंद था। किसी बात को लेकर वह पिछले कुछ दिनों से काफी परेशान चल रहा था। हालांकि अभी पूरी तरह से आत्महत्या के पीछे की वजह का खुलासा नहीं हो पाया है। पुलिस ने मृतक के परिजनों को मामले की सूचना दे दी है।

निचली अदालत के दो जज निलंबित

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने भष्टाचार के आरोप में ट्रायल (निचली) कोर्ट के दो जजों को निलंबित कर दिया है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश गीता मित्तल के सचिवालय के करीबी सूत्रों ने शनिवार को बताया कि द्वारका जिला अदालत में तैनात दो अतिरिक्त सत्र न्यायाधीशों को निलंबित करने का फैसला 21 दिसम्बर को उच्च न्यायालय की पूर्ण पीठ ने किया। सूत्रों ने कहा कि दोनों में से एक जज अतिरिक्त जिला न्यायाधीश (मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण) के पद पर थे जबकि दूसरे न्यायाधीश विशेष जज (बिजली) के पद पर थे। सूत्रों ने बताया कि ऐसे आरोप थे कि एक जज की विदेश यात्राओं का खर्च तीसरा पक्ष वहन कर रहा था जबकि दूसरे जज पर एक फिक्स्ड डिपोजिट (एफ डी) की राशि समय से पहले जारी करने की अनुमति देने के लिए एफ्डी की 10 फीसदी रकम मांगने का आरोप है।

नौ डॉक्टरों व दो नसरे को नोटिस

नई दिल्ली। दिल्ली मेडिकल काउंसिल (डीएमसी) ने दो जुड़वां बच्चों में से एक जीवित बच्चे को भी मृत घोषित करने के सिलसिले में कथित चिकित्सा लापरवाही के मामले में शालीमार बाग स्थित मैक्स अस्पताल के नौ डॉक्टरों और दो नसरे को नोटिस भेजा है। गौरतलब है कि अस्पताल ने गलती से इन्हें मृत घोषित कर दिया था। डीएमसी ने 20 दिसम्बर को नोटिस भेजा और 15 दिन में जवाब देने को कहा है। डीएमसी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया है कि अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक के जरिए नौ डॉक्टरों और दो नसरे को नोटिस भेजा गया है। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व, मीडिया में आई खबरों के आधार पर, हमने मैक्स अस्पताल से एक जवाब मांगा था और उन्होंने करीब एक सप्ताह पहले इसका जवाब दिया था। इस बार हमने डॉक्टरों और नसरे से व्यक्तिगत स्तर पर जवाब मांगा है। डीएमसी ने नोटिस में कहा है कि इस सिलसिले में शालीमार बाग स्थित मैक्स अस्पताल के डॉक्टरों की ओर से कथित चिकित्सा लापरवाही को लेकर डीएमसी ने मीडिया में आई खबरों पर स्वत: संज्ञान लिया।

बसों में सीसीटीवी कैमरे लगाने को निर्भया कोष से मांगी धनराशि

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने बसों में सफर करने वाले यात्रियों, खासकर महिलाओं की बेहतर सुरक्षा के लिए केन्द्र सरकार से निर्भया कोष से आर्थिक मदद मांगी है, जिससे वह 6,300 से ज्यादा बसों में सीसीटीवी कैमरे लगा सके। दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग ने एक वेंडर के जरिए इस परियोजना पर अमल की खातिर एक परामर्शदाता नियुक्त करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। एक सरकारी अधिकारी ने कहा कि डीटीसी और क्लस्टर बसों में सीसीटीवी कैमरे लगाने के लिए निर्भया कोष से वित्तीय सहायता के लिए गृह मंत्रालय से संपर्क किया गया है।

अगले तीन माह तक 40 हजार और फ्लैटों के पजेशन का दिया लक्ष्य

31 तक देने होंगे 40 हजार फ्लैट : योगी

नोएडा (एजेंसी)। बोटेनिकल गार्डन-कालिंदी कुंज मेट्रो लाइन का उद्घाटन करने 25 दिसम्बर को नोएडा आ रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा लेने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को नोएडा पहुंचे। बोटेनिकल गार्डन व एमिटी यूनिवर्सिटी में सुरक्षा व्यवस्था व अन्य तैयारियों का निरीक्षण करने के बाद आयोजित प्रेस वार्ता में मुख्यमंत्री ने कहा कि 31 दिसम्बर तक 40 हजार फ्लैटों का पजेशन दे दिया जाएगा। अगले तीन माह में इतने ही और फ्लैटों का पजेशन दे दिया जाएगा। उन्होंने बिल्डरों के चेतावनी देते हुए कहा कि बायर्स को फ्लैट देने में आनाकानी करने वाले कार्रवाई के लिए तैयार रहें। मुख्यमंत्री ने प्राधिकरण अधिकारियों से भी कहा कि उन बिल्डरों की कोई फाइल नहीं रुकनी चाहिए जिनके कागजात पूरे हों।

बिल्डरों को किसी भी कीमत पर फ्लैट देना ही होगा क्योंकि उन्होंने निवेशकों से पैसा लिया है। उन्होंने बिल्डरों को चेतावनी देते हुए कहा कि फ्लैट देने में नाकाम व बहाने बनाने वाले बिल्डर कार्रवाई के लिए तैयार रहें। उन्होंने कहा कि फ्लैटों की डिलेवरी के लिए बिल्डर को डेवलपर की मदद लेने के साथ ही अपने संसाधनों पर भी काम करें। मुख्यमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि जो मामले अदालत में विचाराधीन हैं उनका निस्तारण अदालत में ही होगा। इसमें प्रदेश सरकार कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी। बाकी के मसले प्रदेश सरकार, प्राधिकरण व बिल्डर मिलकर हल करेंगे। बिल्डरों के सभी मसले केस टू केस आधार पर हल करने की कोशिश सरकार कर रही है। प्रेस कांफ्रेंस के दौरान मुख्यमंत्री ने पिछली सरकारों पर भी हमला बोला। उन्होंने कहा कि भ्रष्ट सरकारों की वजह से नोएडा ही नहीं पूरे प्रदेश का विकास रुका है। नोएडा प्रदेश के विकास का आइना है। उन्होंने कहा कि प्राधिकरण से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए सरकार ने मंत्रिसमूह का गठन किया है। समस्याओं का सार्थक समाधान निकालने का प्रयास किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राधिकरण अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए गए हैं कि प्रत्येक बिल्डर का ऑडिट करा यह पता किया जाए कि कौन समय पर आवास दे सकता है। बिल्डर को सरकार से क्या मदद की जरूरत है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार प्राधिकरण से जुड़ी समस्याओं के अलावा शहर की अन्य समस्याओं को लेकर भी गम्भीर है। नोएडा व ग्रेटर नोएडा में ग्राम सभा और प्राधिकरण के बीच विवाद चल रहा है। प्राधिकरण अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि ग्राम पंचायत में बुनियादी सुविधाओं का अभाव नहीं होना चाहिए।

एनबीसीसी के सीएमडी पर मामला दर्ज, दो गिरफ्तार

गाजियाबाद, दिल्ली और मुंबई में छापेमारी

नई दिल्ली। सीबीआई ने यहां प्रगति मैदान में आईटीपीओ कॉम्प्लेक्स की 2,150 करोड़ रुपये की पुनर्विकास परियोजना में कथित भष्टाचार के मामले में एनबीसीसी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक अनूप कुमार मित्तल पर मामला दर्ज किया है जबकि मामले के संबंध में एक सरकारी अधिकारी और एक अन्य व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। सीबीआई सूत्रों ने बताया कि सीबीआई ने सरकारी अधिकारी प्रदीप कुमार मिश्रा और आकाशदीप चौहान को कल रात गिरफ्तार किया तथा गाजियाबाद, दिल्ली और मुंबई में छापे मारे। उन्होंने बताया कि मित्तल के आवासीय और आधिकारिक परिसरों की तलाशी नहीं ली गई। विशेष सीबीआई अदालत ने आज मिश्रा और चौहान को चार दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। एजेंसी ने प्राथमिकी में आरोप लगाया कि एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड द्वारा

ठेके के सौदे को प्रभावित करने का आरोप

शपूरजी पालोनजी एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड और शपूरजी पालोनजी कतर डब्ल्यूएलएल के संयुक्त उद्यम को 2,149.93 करोड़ रुपये का एक ठेका दिया गया। मुंबई की कैपेसाइट स्ट्रक्चर्स शपूरजी पालोनजी से यह ठेका लेने की कोशिश कर रही थी।

सीबीआई की प्राथमिकी के अनुसार 2,149.93 करोड़ रुपये के ठेके के सौदे को एक सरकारी अधिकारी ने प्रभावित किया जिसने मित्तल पर प्रभाव का इस्तेमाल करने और कैपेसाइट स्ट्रक्चर्स को ठेका दिलाने के बदले में रिश्वत के तौर एक रॉयल एनफील्ड बाइक मांगी। कैपेसाइट स्ट्रक्चर्स के प्रबंध निदेशक संजय कुलकर्णी ने उप अनुबंध हासिल करने के लिए एक मध्यस्थ ऋषभ अग्रवाल से संपर्क किया।

यूक्रेन की महिला व्यापारी ने केंद्र से लगाई गुहार

धोखाधड़ी कर विदेशी महिला से एक करोड़ की ठगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूक्रेन की एक महिला व्यापारी से गुजरात के एक व्यापारी ने आयात-निर्यात के कारोबार की आड़ में धोखाधड़ी कर एक करोड़ से अधिक रपए की ठग लिए। आरोपी व्यापारी राजकोट निवासी खोड़ाभाई नागाजी भाई रमानी है। हालांकि इसकी जांच करते हुए पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार भी किया था, लेकिन आरोपी कुछ दिन बाद ही जमानत पर जेल से बाहर आ गया और विदेशी महिला के रपए भी वापस नहीं किए। अब अपने रपए की वापसी के लिए आखिरकार पीड़िता ने मां के साथ दिल्ली पहुंचकर केंद्र सरकार का दरवाजा खटखटाया है। दिल्ली में आयोजित एक पत्रकार वार्ता में यूक्रेन की महिला व्यापारी अनसतेसिया अकिमोवा ने बताया कि, विदेशी निवेशकों को कारोबार के लिए भारत सरकार के आमंतण्रपर भरोसा करते हुए उन्होंने भारत में निवेश करने का मन बनाया। भारतीय कृषि उत्पादों जानकारी प्राप्त कर अंतर्राष्ट्रीय कृषि खाद्य का यूक्रेन में कारोबार करने वाली अनसतेसिया अकिमोवा भारत के साथ व्यापार करने पहुंची। इसके लिए उन्होंने गुजरात के राजकोट चुना और वहां के ओलो इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कंपनी के खोड़ाभाई नागाजी भाई रमानी से काबुली चना उक्रेन भेजने का करार किया। अनसतेसिया ने इसके लिए उन्हें एक करोड़ 10 लाख रु पए का भुगतान भी कर दिया। पीड़िता का दावा है कि पेमेंट लेने के बाद भी खोड़ा भाई ने काबुली चना भेजने की बजाए फर्जी कागजात तैयार कर माल भेज देने की बात कही और सारे रपए गटक गए। पीड़िता ने जब इसकी शिकायत राजकोट पुलिस व अन्य संवंधित विभागों से की, तो पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन कुछ दिन बाद ही आरोपी जमानत पर बाहर आ गया। पूरी प्रक्रिया के बावजूद पीड़िता को उसके रपए वापस नहीं मिले। वहां दर-दर की ठोकरें खाने के बाद हारकर पीड़िता ने दिल्ली पहुंचकर केंद्र सरकार से न्याय की गुहार लगाते हुए उद्योग मंत्रालय व उससे जुड़ी अन्य सस्थाओं, केंद्रीय जांच ब्यूरो एवं प्रवर्तन निदेशालय में इसकी शिकायत दर्ज कराई है। यहां भी पीड़िता की गुहार पर कोई कार्रवाई होती नहीं दिख रही है। पीड़िता का कहना है कि अगर भारत में विदेशी कारोबारियों के रपए की सुरक्षा की गारंटी नहीं है, तो कोई भारत से कैसे व्यापार करेगा। इस संदर्भ में यूक्रेन के दूतावास ने पीड़िता को विदेश मंत्री सुषमा स्वराज से भी मिलने की सलाह दी है। बताया जाता है कि आरोपी खोड़ाभाई के खिलाफ पहले भी इस प्रकार के कई मामले दर्ज हैं।

राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी की मौत की सीबीआई जांच की मांग को लेकर मार्च

घटना ने जेल में कड़े सुरक्षा के दावों की खोली पोल

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्तर के हॉकी खिलाड़ी रिजवान खान की संदिग्ध मौत की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से कराने की मांग को लेकर शनिवार को जामिया मिल्लिया इस्लामिया के छात्रों ने विविद्यालय परिसर में विरोध मार्च निकाला और चेतावनी दी कि अगर दस दिन में उचित कार्रवाई नहीं की गई तो वह दिल्ली में पुलिस मुख्यालय का भी घेराव करेंगे। जामिया की एक छात्रा खुशबू खान ने आरोप लगाया कि रिजवान ने खुदकुशी नहीं की, बल्कि उसकी हत्या की गई है। पुलिस-प्रशासन जांच के नाम पर खानापूर्ति कर रहा है। छात्रों ने मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग करते हुए कहा कि हत्या के पीछे लव-जेहाद की आशंकाओं से इनकार नहीं किया जा सकता है। आपको बता दें कि छात्र रिजवान का शव छह दिसम्बर को दक्षिणी दिल्ली के सरोजिनी नगर थाना इलाके में मिला था। उनका शव कार की ड्राइविंग सीट पर था। उसकी कनपटी पर गोली का निशान था और सारा शरीर खून से सना था। कार के अंदर पुलिस को एक कट्टा भी मिला था।

प्राथमिक जांच में पुलिस इसे आत्महत्या का मामला मानकर चल रही थी। परिजनों का आरोप है कि रिजवान की हत्या कर उसका शव कार में रखा गया है। पुलिस का कहना है कि अभी तक की जांच में ऐसा कुछ सामने नहीं आया है, जिससे लगे कि रिजवान की हत्या कर उसका शव कार में रख दिया गया हो। रिजवान जामिया से बीए कर रहा था।

कार से नकदी व कागजात चोरी

नई दिल्ली। शक्करपुर थाना अंतर्गत लक्ष्मीनगर से एक कार से नकदी व दस्तावेज आदि की चोरी हो गई। पीड़ित ने मामले की सूचना पुलिस को भी दी लेकिन इस बाबत प्राथमिकी तो दर्ज कर ली गई लेकिन अभी आरोपी का पता नहीं चल पाया है। नोएडा के सेक्टर बीस में रहने वाले जयहिंद सिंह किसी काम से शुक्रवार को लक्ष्मीनगर आए थे। उन्होंने अपनी कार मेट्रो पिलर नंबर 43 के समीप सड़क किनारे खड़ी की थी। कुछ देर बाद मौके पर वापस आने के बाद पीड़ित को पता चला कि कार का दरवाजा खुला है और कार से नकदी समेत कई अन्य कागजात आदि गायब है। जिस बैग को चोरी किया गया।

दक्षिणी दिल्ली के जाम को केजरीवाल जिम्मेदार: बिधूड़ी

नई दिल्ली। यातायात के बोझ से कराहती दक्षिणी दिल्ली को जाम से बचाने की मांग को लेकर भाजपा सांसद रमेश बिधूड़ी शनिवार को अपने समर्थकों के साथ मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल के सरकारी आवास पहुंचे और जमकर प्रदर्शन किया। सांसद ने मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल पर गुस्सा निकाला।

आम आदमी पार्टी के विधायकों की तुलना किन्नरों से करते हुए कहा कि वह उन्हीं के विरुद्ध प्रदर्शन करने आए हैं।

भाजपा सांसद ने जाम के हालात के लिए केजरीवाल को जिम्मेदार ठहराया। प्रदर्शनकारियों में बड़ी संख्या में पार्टी के समर्थक एवं कार्यकर्ता थे। मुख्यमंत्री के विरुद्ध प्रदर्शन के लिए समर्थकों के साथ भाजपा सांसद चंदगीराम अखाड़े के पास एकत्र हुए और नारेबाजी करते हुए केजरीवाल के सरकारी आवास की ओर बढ़ने लगे।

दिल्ली पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए बैरिकेटिंग की थी। सांसद ने केजरीवाल पर आरोप लगाया कि दक्षिणी दिल्ली में एमबी रोड के साथ-साथ मेट्रो को आना है, लेकिन वह इस प्रोजेक्ट को दबाए बैठे हैं। उन्होंने कहा कि प्रयास करके केंद्र से इसकी अनुमति दिलवा दी गई है। एमबीरोड के साथ-साथ करीब छह विधानसभाएं लगती हैं। इस सड़क पर सुबह से शाम तक जाम लगा रहता है। उन्होंने कहा कि अब स्थिति यह हो गयी है।

पुलिस की वर्दी में बदमाशों ने लूटी 35 लाख की सिगरेट

आटो में लदी थी ब्रांडेड सिगरट व्यापारी को डिलीवर करने ले जा रहा था ऑटो मालिक

नई दिल्ली (एजेंसी)। वर्दी की आड़ में कुछ बदमाशों ने सरेआम 35 लाख रपए की सिगरट से भरा मालवाहक ऑटो लूट लिया। लूटपाट को इस तरह से अंजाम दिया गया, कि ऑटो सवार अपने बचाव में कुछ नहीं कर सका। घटना के बाद पीड़ित हौजकाजी निवासी अतीक अहमद (52) की शिकायत पर पहुंची पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की छानबीन कर रही है।

पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक, अतीक अपना मालवाहक ऑटो चलाकर जीविका चलाते हैं। अतीक के मुताबिक 21 दिसम्बर की शाम पुलिस वह अपना मालवाहक ऑटो लेकर मयूर विहार फेस-1 गए थे। जहां से 35 लाख रपए की कीमत की ब्रांडेड सिगरट लेकर कारोबारी सचिन गुप्ता को डिलीवर करनी थी। पीड़ित के मुताबिक शाम 5 बजे गीता कॉलोनी फ्लाईओवर पर अचानक बाइक सवार दो लोगों ने ओवरटेक कर ऑटो रुकवा लिया। इनमें से एक बदमाश पुलिस की वर्दी में था।

रुकने पर दोनों माल की जांच-पड़ताल करने लगे और अतीक उन्हें सरकारी कर्मचारी समझकर सारी जानकारी देने लगा। इसी बीच पीछे से एक कार भी उनके पास आकर रुकी, जिसमें तीन-चार लोग सवार थे। सभी ने अतीक पर गैर कानूनी काम करने का आरोप लगाते हुए ऑटो जब्त करने की बात कही और अतीक को पूछताछ के बहाने जबरन कार में बैठा लिया। इसके बाद बदमाशों ने उसे एक घंटे तक कार में इधर-उधर घुमाया और बाद में वजीराबाद इलाके में धक्का देकर फरार हो गए। ऑटो की तलाश में जब पीड़ित बुराड़ी अथॉरिटी पहुंचा, तो उसे ऑटो वहां नहीं मिला।

पीड़ित ने पुलिस को सूचना देकर केस दर्ज कराया। पीड़ित के मुताबिक ऑटो में सिगरट के अलावा गाड़ी के दस्तावेज और 22 हजार रपए थे। केस दर्ज कर पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

प्रीत विहार के मेट्रो हॉस्पिटल में आग

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्वी दिल्ली के प्रीत विहार स्थित मेट्रो हास्पिटल एंड कैंसर इंस्टीट्यूट में उस समय हड़कंप मच गया जब आग लगने के कारण वहां भर्ती 84 मरीजों की जान पर बन आई। शनिवार दोपहर अचानक अस्पताल में आग लग गई। इस कारण आग का धुआं अस्पताल की इमारत में भर गया। मौके पर पहुंचे पुलिस, दमकल विभाग, आपदा प्रबंधन, कैट्स व अन्य आपात सेवा दलों ने बचाव कार्य शुरू किया। दूसरी मंजिल पर आईसीयू की चार खिड़कियां तोड़कर मरीजों को

अस्पताल में मौजूद थे 84 मरीज, 15 दमकलों ने डेढ़ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद पाया आग पर काबू बड़ा हादसा होते-होते बचा

हाईड्रोलिक क्रेन की मदद से बाहर निकाला गया। सभी को नोएडा सेक्टर-11 स्थित मेट्रो अस्पताल में शिफ्ट किया गया है। हादसे में कुछ मरीज व अधिकारी मामूली रूप से जख्मी हो गए। घायलों का सेक्टर-11 के अस्पताल में इलाज जारी है। शुरूआती जांच के बाद एसी में लगी आग को हादसे का कारण बताया जा रहा है। पुलिस केस दर्ज कर मामले की छानबीन कर रही है।शनिवार दोपहर करीब 3.20 बजे पुलिस व दमकल को सूचना मिली कि प्रीत विहार के मेट्रो अस्पताल में आग लग गई है। पीसीआर व दमकल के पहुंचने से पूर्व अस्पताल के बराबर में मौजूद प्रीत विहार थाने में तैनात पुलिसकर्मी मदद को वहां पहुंच गए। दूसरी मंजिल पर लगे एसी में आग लगने के कारण धुआं पूरे अस्पताल में भर गया। वहां अफरा-तफरी मच गई। अस्पताल से चीख-पुकार की आवाजें आने लगी। इस बीच दमकल की 15 गाड़ियां व हाईड्रोलिक क्रेन वहां पहुंच गई। मेट्रो अस्पताल की 15 एंबुलेंस, कैट्स की 15 एंबुलेंस व अन्य एंबुलेंस वहां पहुंच गई। दमकल कर्मियों ने बिना देर किए दूसरी मंजिल पर आईसीयू की खिड़की तोड़ कर मरीजों को क्रेन की मदद से नीचे उतारा जाने लगा। इधर परिजनों के परिजन व स्थानीय लोग भी मदद में जुट गए। एक-एक कर कुल 84 मरीजों को अस्पताल से बाहर निकालकर दूसरे अस्पताल शिफ्ट किया गया।वहीं कड़ी मशक्कत के बाद दमकल कर्मियों ने 4.15 बजे आग पर काबू पा लिया। 4.50 बजे आग पूरी तरह से बुझ गई। वहीं खबर मिलते ही ईस्ट डिस्ट्रिक्ट के डीसी कुलानंद जोशी, डीसीपी ओमवीर सिंह, एसीपी प्रीत विहार डॉ हेमंत तिवारी व बचाव दल के अन्य अधिकारी मौके पर पहुंच गए। सांसत में पड़ी मरीजों की जान : उद्योगपति सुरेश जिंदल ने कहा कि वे अपने फूफा स्वर्गीय मोती राम सिंघल की अत्योष्टि के बाद उनके आवास सी ब्लाक, प्रीत विहार जा रहे थे, इस दौरान देखा कि अस्पताल की खिड़कियों से तेज धुआं और मरीज इधर-उधर भाग रहे थे।

खुश रहो लेकिन कभी संतुष्ट मत रहो। ब्रूस ली

मीडिया का हाइप ''सनद'

2018 में जिन 8 राज्यों में चुनाव होने हैं, उनमें भाजपा के लिए मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और कर्नाटक बेहद अहम हैं। इनमें तीन राज्यों में उसे अपनी सत्ता बचानी है, तो कर्नाटक को कांग्रेस से छीनने की चुनौती सामने है। मेघालय और मिजोरम में उसका मुकाबला सत्तारूढ़ कांग्रेस से है, तो त्रिपुरा में वाम मोर्चे से। नगालैंड में अपनी गठबंधन सरकार को बनाए रखना भी उसकी प्राथमिकता है। बहरहाल, अब तक की रेस तो यही कह रही है कि गुजरात के आगे भी जीत है हम मानते हैं कि अफवाहों में भी कुछ सच होता है, कि हमारे अलावा हर आदमी बेईमान है, और इस पर भी हम मानते हैं कि ईमानदारी फिर भी संभव है। मीडिया में हम एक बड़े भ्रष्ट को देखते हैं, और अपने को उतना ही ईमानदार महसूस करते हैं। कथित ''टू जी घोटाले' के सभी आरोपितों को बरी करते हुए माननीय न्यायाधीश द्वारा अपने फैसले में ''अफ्वाहों, गप्पों और अटकलों' से बनी ''जन अवधारणाओं' पर की गई टिप्पणी मीडिया के लिए भी काबिलेगौर है। गप्पें, अफवाहें, अटकलें और अंध-अवधारणाएं कैसे-कैसे गुल खिलाती हैं, यह सोचते-सोचते मुझे पांच-छह साल पहले के वे दिन याद आने लगे जब रामलीला मैदान में अन्ना जी भूख हड़ताल पर बैठे थे, और मीडिया चौबीस बाई सात उनके भाषणों को दिखाया करता था। एक तो रामलीला मैदान, दूसरे एक निष्कलंक आम आदमी की भूख हड़ताल, तीसरे हजारों लोग नारे लगाते हुए। सब साफथा। एक ओर ''ईमानदार' थे। मीडिया क्या झूठ बताएगा? हर ताकतवर पर शंका करने वाला हमारा मन सोचता कि जिनको भ्रष्ट बताया जा रहा है, वे अवश्य ही भ्रष्ट होंगे वरना इतने लोग नारे न लगाते, भूख हड़ताल न करते। लोकपाल ईमानदारी का नया देवता था, जिसे सिरजा जा रहा था, और ऐसा लगता था कि लोकपाल बनते ही ईमानदारी का राज कायम हो जाएगा। ईमानदार दिखने के लिए लोग रामलीला मैदान को विजिट करते और ईमानदारी की गंगा में एकाध डुबकी मार लेते। मीडिया की दुर्निवार कवरेज ने ऐसा घटाटोप बनाया कि जो शामिल न हुआ वह मानो बेईमान हुआ। टू जी पर आए फैसले के बाद लगता है कि टू जी को लेकर बांधा गया तूमार बहुत दूर तक अफवाहों, गप्पों, अटकलों से निर्मित अवधारणाओं का परिणाम था। कानूनी भाषा में जब तक आरोप सिद्ध न हों, तब तक आरोपित निदरेष माना जाता है। ''जन अवधारणाएं' अंधी भी हो सकती हैं। कई बार वे ''लिंच मॉब्स' तक का निर्माण कर डालती हैं। देश के कई हिस्सों में किसी गरीब औरत को ''डायन' मानकर मार डालने वाले और यूपी, हरियाणा या राजस्थान में सिर्फ''बीफ' या ''लव जिहाद' के शक पर किसी की हत्या कर डालने वाले ''झुंड' अफ वाहों, गप्पों, अटकलों और अवधारणाओं से ही ''एक्शन' किया करते हैं। हम मानते हैं कि अफवाहों में भी कुछ सच होता है। हम यह भी मानते हैं कि हमारे अलावा हर आदमी बेईमान है, और इस तरह हम सबको बेईमान मानते हैं, और इस पर भी हम मानते हैं कि ईमानदारी फिर भी संभव है। मीडिया में जब हम एक बड़े भ्रष्ट को देखते हैं, अपने को उतना ही ईमानदार महसूस करते हैं। उसे देख हम सब अपनी-अपनी छोटी-छोटी बेईमानियों को भूल जाते हैं क्योंकि हम तो पकड़े ही नहीं गए और इस तरह हम अपने को छोड़ बाकी सबको बेईमान मानकर खुश होते रहते हैं। जो नहीं पकड़ा जाता वो ''ईमानदार' होता है। जो पकड़ा जाता हैं, ''बेईमान' कहलाता है। ''अंध-मान्याताएं' इसी तरह काम करती हैं। अब यह साफ हो चुका है कि ''टू जी' के कथित ''घपले' को मीडिया में जानबूझ कर लीक किया गया और मीडिया के एक हिस्से ने इसे इतना जोर-शोर से उठाया और सिर्फ''अनुमानित नुकसान' पर पूरा केस बना दिया गया। मीडिया के एक हिस्से ने अपनी अदालत लगाकर फैसला तक सुना दिया। कंपटीशन के मारे दूसरे चैनलों ने भी इस हल्ले को सच मान लिया। मीडिया ''सच' की खोज नहीं करता। खोज करता तो जो बात जज को कहनी पड़ी, वह कहता और अफवाह की इंडस्ट्री के सहारे काम करने के लिए माफी मांगता। लेकिन वह सच की खोज क्यों करे? उसे तो एक ''सच' पकड़ा दिया जाता है, उसे ही वह ''जनता की अवधारणा' में बदलने लगता है। ''इंडिया वांट्स दिस', ''नेशन वांटस दिस' जैसी मीडिया की लाइनें देश और राष्ट्र की जगह खुद को रखने के छल हैं। मीडिया ऐसे ही छलों से काम करता है।

तनाव दूर करना है तो कुछ पल खुद के साथ बिताना शुरू कीजिए

हाल ही में हुए कई शोध दावा करते हैं की जो लोग अकेले में ज्यादा समय बि ताते हैं वे फिजिकल, मेंटल , इमोशनल स्ट्रेस से काफी हद तक मुक्त रहते हैं। जो खुदको सुपर-मॉम्स और सुपर-डैड्स समझते हैं दरअसल उन्हें भी एक ब्रेक की जरूरत होती ही है। इनमें से एक शोध में ये भी पाया गया है कि मनुष्य शरीर को इस तरह डिजाइन ही नहीं किया गया है कि वो लगातार लोगों सेघिरा रहे। शादी-शुदा जोड़ों को भी एक-दूसरे से थोड़ी दूरी बनाए रखने की सलाह दी जाती है। ये भी तनाव मैनेज करने का एक तरीका है। लगातार लोगों से घिरे रहते हैं तो एकाग्रता और निर्णय क्षमता पर विपरीत असरपड़ता है। जल्दी गुस्सा आने लगता है। फ्रांस हॉज सनब्रूनेट ने अपनी कि ताब 'द सीक्रेट गार्डन' में एक ऐसे गार्डन का जिक्र किया है जहां राजा-महाराजा कुछ पल अकेले बिताने और ध्यान लगाने के लिए जाया करते थे। एकांत को मनुष्य का दोस्त बताया गया है जो स्वतंत्र रहना भी सि खाता है। मशहूर हॉलीवुड स्टार क्लिंट ईस्टवुड और जूलिया रॉबर्ट्स भी अकेले समय बिताना पसंद करते हैं। शोध बताते हैं कि दिमाग रिफ्रेश करनेका ये सबसे कारगर तरीका है। इस तरह हम जीवन के जरूरी मुद्दों पर ज्यादा ध्यान दे पाते हैं और पहले से ज्यादा साफ सोच रख पाते हैं। डिप्रेशन से भी बचते हैं। पिकासो ने कहा है कि गंभीर कार्य करने के लिए खुद को जानना जरूरी है। जब आप अकेले होते हैं तो अपनी ताकत और लक्ष्य बेहतर समझ पाते हैं।

सत्संग

विचार सच्ची शक्ति है, इन्हें एकाग्र करें

मन की एकाग्रता का दूसरा अर्थ है विचारों की एकाग्रता। विचार व्यर्थ की चीज नहीं हैं। बहुत से लोग इस बात की चिंता नहीं करते कि उनके मन-मस्तिष्क में किस प्रकार के विचार आते-जाते रहते हैं। गंदे और निरुपयोगी विचार आने पर भी वे उनमें तृण की तरह बहते रहते हैं। वे नहीं समझ पाते कि इससे उन्हें क्या और कितनी हानि होती है? विचार एक शक्ति है, अमोघ शक्ति। वे मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन पर अपना स्थायी प्रभाव डालते हैं और अपने अनुरूप उसे हानि या लाभ की ओर ले जाया करते हैं। मन की एकाग्रता की उपलब्धि होते ही मनुष्य के अंदर सोई वे शक्तियां जाग उठेंगी, जिनके बल पर वह असंभव दिखने वाले कार्य भी संभव कर सकता है। बिखरे मन और विश्रृंखल शक्ति से संसार में कोई भी बड़ा काम नहीं किया जा सकता। अपनी शक्तियों का नियोजित उपयोग ही वह उपाय है, जिससे किसी भी कार्य की सिद्धि पाई जा सकती है।

भविष्य का संकेत

लोक सभा चुनाव के दौरान कांग्रेस मुक्त भारत के नारे के महज साढ़े तीन साल में ही यह लक्ष्य 87 फीसद पूरा हो चुका है। दरअसल, गुजरात चुनाव को एक राज्य के विधानसभा चुनाव के तौर पर देखा ही नहीं जा रहा था। भाजपा और कांग्रेस, दोनों दल इसे 2019 की हवा तय करने वाला चुनाव मान कर ही मैदान में कूदे थे। इसकी एक वजह तो यह थी कि गुजरात प्रधानमंत्री मोदी और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह का गृह प्रदेश है, इसलिए चुनाव के भावी परिणामों को इन दोनों की लोकप्रियता के उतार-चढ़ाव का पैमाना माना जा रहा था, तो दूसरी ओर माना जा रहा था कि इस उद्योग संपन्न प्रदेश के चुनावी नतीजों से तय हो जाएगा कि जीएसटी-नोटबंदी का क्या असर हुआ है। ये आकलन गुजरात को ध्यान में रख कर नहीं।

सतीश पेडणोकर

2018 में जिन 8 राज्यों में चुनाव होने हैं, उनमें भाजपा के लिए मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और कर्नाटक बेहद अहम हैं। इनमें तीन राज्यों में उसे अपनी सत्ता बचानी है, तो कर्नाटक को कांग्रेस से छीनने की चुनौती सामने है। मेघालय और मिजोरम में उसका मुकाबला सत्तारूढ़ कांग्रेस से है, तो त्रिपुरा में वाम मोर्चे से। नगालैंड में अपनी गठबंधन सरकार को बनाए रखना भी उसकी प्राथमिकता है। बहरहाल, अब तक की रेस तो यही कह रही है कि गुजरात के आगे भी जीत है गुजरात चुनाव के नतीजों ने 2019 में देश की दिशा तय कर दी है। ये नतीजे इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं कि राज्य में 22 साल की सत्ता से पनपी विरोधी लहर तो मौजूद थी ही, चर्चित पाटीदार आंदोलन, केंद्र की नोटबंदी और जीएसटी ने गुजरात चुनाव को देश के भविष्य का संकेत मान लिया था। लेकिन नतीजों के बाद कहना होगा कि जनता में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जादू जारी है और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह की रणनीति का विकल्प नहीं है। वरना क्या कारण हो सकता है कि 2014 में जो पार्टी देश के केवल पांच राज्यों तक सीमित थी, महज साढ़े तीन सालों में ही 19 राज्यों तक फैल चुकी है, और देश की करीब 75 फीसद आबादी पर उसका शासन है। 2014 में लोक सभा चुनाव के दौरान कांग्रेस मुक्त भारत के नारे के महज साढ़े तीन साल में ही यह लक्ष्य 87 फीसद पूरा हो चुका है। दरअसल, गुजरात चुनाव को एक राज्य के विधानसभा चुनाव के तौर पर देखा ही नहीं जा रहा था। भाजपा और कांग्रेस, दोनों दल इसे 2019 की हवा तय करने वाला चुनाव मान कर ही मैदान में कूदे थे। इसकी एक वजह तो यह थी कि गुजरात प्रधानमंत्री मोदी और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह का गृह प्रदेश है, इसलिए चुनाव के भावी परिणामों को इन दोनों की लोकप्रियता के उतार-चढ़ाव का पैमाना माना जा रहा था, तो दूसरी ओर माना जा रहा था कि इस उद्योग संपन्न प्रदेश के चुनावी नतीजों से तय हो जाएगा कि जीएसटी-नोटबंदी का क्या असर हुआ है। ये आकलन गुजरात को ध्यान में रख कर नहीं, बल्कि आम चुनाव को ध्यान में रख कर किए जाने थे।जाहिर है, किसी प्रदेश की राजनीति में जितनी ताकत झोंकी जाती है, दोनों ही दलों ने उससे कहीं ज्यादा ताकत गुजरात चुनाव में झोंक रखी थी। कांग्रेस को यहां से 2019 की रेस शुरू करनी थी, तो बीजेपी को साबित करना था कि जनता में उसकी लोकप्रियता और विश्वसनीयता उसी तरह कायम है, जैसी लोकप्रियता के साथ 2014 में वह प्रचंड बहुमत लेकर केंद्र में सत्तासीन हुई थी। और भाजपा ने यह साबित भी कर दिया। गुजरात में राहुल गांधी ने चुनाव प्रचार की अलग रणनीति अपनाई। लेकिन यह रणनीति परंपरागत ही रही। कोई चौंकाने वाली बात सामने नहीं आई। वहीं मोदी चुनाव प्रचार में हर बार कुछ न कुछ ऐसा जरूर कर देते हैं, जो लोगों से उन्हें जोड़ता भी है, और विरोधियों को चौंकाता भी है। इस बार पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने के लिए मोदी ने हजारों कैडरों से सीधे फोन पर बातचीत की। इससे कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ा और वे समर्पित होकर काम करते नजर आए। दरअसल, आम जनता से जुड़कर रहना मोदी का राजनीतिक स्वभाव बन चुका है। फेसबुक और ट्वीटर पर सक्रिय दुनिया के वे सबसे बड़े नेता हैं। आम लोगों को भी फॉलो करते हैं। मन की बात के जरिए आम लोगों से इंटरेक्ट करते हैं। इंस्टाग्राम पर तस्वीरें डालकर, ट्वीट कर यानी किसी न किसी प्रकार से वे जनता के साथ बातचीत करते रहते हैं। चुनाव के दौरान इस काम का उन्हें निश्चित रूप से फायदा मिलता है। शायद यह भी एक वजह है कि नोटबंदी, जीएसटी और पाटीदार जैसे मुद्दे गुजरात विधानसभा चुनाव में असर नहीं डाल सके और भाजपा को इसका फायदा मिला। इतना ही नहीं, हार्दिक, जिग्नेश और अल्पेश की घरेलू तिकड़ी से घिरी भाजपा को राहुल के तीखे और आम लोगों की दुखती रग पर हाथ रख देने वाले धुंआधार चुनाव प्रचार का भी सामना करना पड़ रहा था, जो कांग्रेस अध्यक्ष की ताजपोशी के लिए तैयार राहुल का शायद पिछले 13 वर्षों के सबसे आक्रामक चुनावी अभियान के रूप में देखा जा रहा था। राहुल के लिए अध्यक्ष पद संभालने से पहले और 2019 की तैयारियों को देखते हुए ये चुनाव क्या मायने रखते थे, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उन्होंने गुजरात में ताबड़तोड़ 30 रैलियां कीं और 32,000 किमी. की यात्रा की। गुजरात पर फोकस रखने के लिए हिमाचल प्रदेश को अनदेखा कर दिया और वहां महज 3 रैलियां कीं। इसलिए कि साढ़े तीन साल की मोदी सरकार को गुजरात में ही विफल करार देकर 2019 का रास्ता तैयार किया जाए। भाजपा के लिए चिंता की बात यह थी कि राहुल की सभाओं में भीड़ भी जुट रही थी। लेकिन यह मोदी और अमित शाह का ही करिश्मा था कि पार्टी संगठन ने राहुल के व्यापक समर्थन को भी वोट में तब्दील नहीं होने दिया। भाजपा के लिए गुजरात चुनाव कितना अहम था, इसे समझने के लिए उस लाव-लश्कर को देखना जरूरी है, जो पूरे चुनाव अभियान के दौरान गुजरात में डेरा डाले रहा। केंद्र सरकार के तकरीबन सारे मंत्री किसी न किसी समय गुजरात में पार्टी के लिए जान लड़ाते नजर आए। यहां तक कि मोदी ने भी राहुल की काट के लिए 34 रैलियां कर डालीं और चुनाव अभियान के दौरान राहुल से 10,000 किमी. से ज्यादा की दूरी तय की। यह मोदी का ही करिश्मा है कि एक समय पिछड़ती-सी लग रही भाजपा ने न केवल सत्ता बरकरार रखी, बल्कि पिछली बार की तुलना में यहां 1.25 प्रतिशत वोटों की बढ़ोतरी भी की।गुजरात के प्रतिष्ठापूर्ण चुनाव में जहां मोदी का जादू वोटों में तब्दील होता दिखाई दिया, वहीं अमित शाह का प्रबंधन पार्टी को एकजुट रखने में कामयाब रहा। उनके नेतृत्व में पार्टी अपने वोटरों को बूथ तक लाने में सफल रही। मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की इस जुगलबंदी ने उत्तराखंड, झारखंड, महाराष्ट्र, हरियाणा, गोवा, असम, मणिपुर, अरु णाचल प्रदेश और अब हिमाचल प्रदेश से कांग्रेस को बाहर कर दिया। हिमाचल में तो पार्टी ने 68 में से 44 सीटें जीत कर जबर्दस्त जीत दर्ज की है। गुजरात और हिमाचल के साथ अब भाजपा ने 14 राज्यों में अपनी सरकार बना ली है, जबकि 5 राज्यों, नगालैंड, सिक्किम, आंध्र प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और बिहार में उसकी गठबंधन सरकार है। अब तक 29 राज्यों में से 19 में केसरिया रंग छा चुका है। दूसरी तरफकांग्रेस अब सिर्फ5 राज्यों कर्नाटक, पंजाब, पुडुचेरी, मेघालय और मिजोरम तक सिमट कर रह गई है। भाजपा के लिए यह बड़ी उपलब्धि है कि उसने असम के साथ साथ पूर्वोत्तर राज्यों में कमल खिला दिया है। इसका श्रेय पूरी तरह मोदी को जाता है, जिन्होंने इन राज्यों के न सिर्फ ताबड़तोड़ दौरे किए हैं, बल्कि कई बड़ी सौगातें भी इन छोटे राज्यों को दी हैं। म्यांमार, भूटान और चीन की सीमा पर सेना की सक्रियता का एक मतलब यह भी है कि इन इलाकों में भाजपा के रणनीतिकार अपनी राजनीतिक पैठ बढ़ाने के लिए सक्रिय हैं। प. बंगाल में भी अब भाजपा पहले के मुकाबले काफी मजबूत हो चली है। इसके अलावा, वाम दलों के प्रभाव वाले केरल पर भी पूरा ध्यान दिया गया है। 2018 में जिन 8 राज्यों में चुनाव होने हैं, उनमें भाजपा के लिए मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और कर्नाटक बेहद अहम हैं। इनमें तीन राज्यों में उसे अपनी सत्ता बचानी है, तो कर्नाटक को कांग्रेस से छीनने की चुनौती सामने है। पूर्वोत्तर के मेघालय और मिजोरम में भी उसका मुकाबला सत्तारूढ़ कांग्रेस से है, तो त्रिपुरा में वाम मोर्चे से। नगालैंड में अपनी गठबंधन सरकार को बनाए रखना भी उसकी प्राथमिकता है क्योंकि 2019 के लोक सभा चुनाव से पहले अपनी ताकत और लोकप्रियता दिखाने का यह आखिरी मौका होगा। बहरहाल, अब तक की रेस तो यही कह रही है कि गुजरात के आगे भी जीत है।

चलते चलते

देश की आर्थिक सेहत बताने वाला स्कोर कार्ड चाहिए

प्रधानमंत्री ने हाल ही में डॉ. बिबेक देबराय की अध्यक्षता में आर्थिक सलाहकार परिषद गठित की है। इसी वक्त नोटबंदी व जीएसटी के बाद जीडीपी वृद्धि में गिरावट देखी गई है। यदि आम आदमी विशेषज्ञों की राय से चले तो वह भ्रमित हो जाएगा। पूर्व वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा जैसे लोग कहते हैं कि अर्थव्यवस्था गंभीर दबाव में है, जबकि मौजूदा वित्त मंत्री अरुण जेटली कहते हैं कि देश कुछ छोटे-मोटे धक्कों का सामना कर रहा है और जल्दी ही उबर जाएगा। भारत जैसी विशाल अर्थव्यवस्था में कुछ सेक्टर हमेशा ही अन्यों से बेहतर प्रदर्श न करेंगे। इस तरह अर्थव्यवस्था खराब चल रही है तो न तो हर कि सी को तकलीफ होगी और न इसके अच्छे चलने पर हर व्यक्ति को फायदा ही होगा। जहां आर्थि क सलाहकार परिषद प्रधानमंत्री को सलाह देने के लिए है, यह 8-10 निर्णायक संकेतक वाला साझा आर्थि क स्को रकार्ड लाकर पूरे देश को ही सलाह दे सकती है। ये संकेतक देश की आर्थिक सेहत का आकलन करेंगे। ये तथ्यों को लेंगे, जिनका सारे भारतीयों के लिए महत्व है जैसे नौकरियां, भुगतान संतुलन आदि। चूंकि परिषद में विशेषज्ञ हैं तो किसी मंत्री की बजाय उससे जारी स्को रकार्ड की विश्वसनीयता ज्यादा होगी। स्कोरकार्ड कारगर होगा इसके तीन कारण हैं: एक, जीडीपी के आंकड़े पर्याप्त नहीं है, क्योंकि कभी इसमें कुछ तिमाहियों का तो कभी बरसों का आकलन होता है। इससे अर्थव्यवस्था का पूरा परिदृश्य सामने नहीं आता। जिनकी वोटर को परवाह हो, वह सरकार को लंबी अवधि की प्राथमिकताओं की स्पष्ट दिशा देंगे। तीन, राजनीति क दल आर्थिक डेटा का इस्ते माल अपनी सुवि धाके हिसाब से सरकार का समर्थन या आलोचना में करते हैं। कॉमन स्कोरकार्ड से राजनीति क लाभ के लिए ऐसी गलत सूचनाएं फैलाना खत्म होगा। जीवंत लोकतंत्र की पहली जरूरत है सारे मतदाताओं को ऐसी सूचना जो सही, साझा और उपयोगी हो। परिषद ऐसी प्रक्रिया को संस्था गत रूप देकर हर भारतीय को कारगर ढंग से सरकार का मूल्यांकन करने का अधिकार देकर सशक्त बना सकती है।

> आम आदमी विशेषज्ञों की राय से चले तो वह भ्रमित हो जाएगा। पूर्व वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा जैसे लोग कहते हैं कि अर्थव्यवस्था गंभीर दबाव में है, जबकि मौजूदा वित्त मंत्री अरुण जेटली कहते हैं कि देश कुछ छोटे-मोटे धक्कों का सामना कर रहा है और जल्दी ही उबर जाएगा। भारत जैसी विशाल अर्थव्यवस्था में कुछ सेक्टर हमेशा ही अन्यों से बेहतर प्रदर्श न करेंगे। इस तरह अर्थव्यवस्था खराब चल रही है।

फोटोग्राफी...

लगभग 1000 फीट की ऊंचाई पर हवा में दिखे सांता क्लॉज़

ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में क्रिसमस का माहौल बन गया है। यहां की सबसे ऊंची बिल्डिंग्स में से एक यूरेका टावर्स की 88वीं फ्लोर पर यूरेका स्कायडेक के बाहर सांता क्लॉज के भेष में एक स्टंटमैन इन दिनों लोगों का मनोरंजन कर रहा है। यूरेका टावर मेलबर्न की 297.3 मीटर (लगभग 1000 फीट) स्कायस्क्रेपर है। अगस्त 2002 में इसका निर्माण शुरु हुआ था जो जून 2006 में पूरा हुआ। यूरेका स्कायडेक इस बिल्डिंग के 88वें फ्लोर पर फैला हुआ है। वीकेंड्स पर यहां परिवार नजर आते हैं।

फिलिस्तीन-इस्त्रइल विवाद

यरूशलम को इस्त्रइल की राजधानी के तौर पर मान्यता देने के एक तरफा फैसले पर अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप विश्व समुदाय से अलग-थलग पड़ गए हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव पर भारत समेत 128 देशों ने एक स्वर से अमेरिकी फैसले को खारिज कर दिया कि फिलिस्तीन-इस्त्रइल विवाद को बातचीत के जरिये ही सुलझाया जा सकता है। ताज्जुब की बात है कि फ्रांस और ब्रिटेन जैसे मित्र राष्ट्रों ने भी ट्रंप का साथ छोड़ दिया। हालांकि संयुक्त राष्ट्र का यह प्रस्ताव बाध्यकारी नहीं है। यह प्रतीकात्मक है। फिर भी इस प्रस्ताव ने ट्रंप की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा को धक्का पहुंचाया है, जो अपनी ताकत के बलबूते सात दशक पुराने और अति उलझावपूर्ण विवाद को महज चुटकी में सुलझा कर एक बड़ी नियंतग्र उपलब्धि हासिल करने का सपना देख रहे थे। इसको पाने के लिए उन्होंने धमकियां भी दीं कि अमेरिकी मान्यता को खारिज करने के लिए महासभा में लाये जा रहे प्रस्ताव का समर्थन करने वाले देशों की आर्थिक मदद रोक देंगे। उनकी धमकी बेअसर साबित हुई। अमेरिका पर निर्भर सात-आठ छोटे देशों ने ही ट्रंप का समर्थन किया। नियंतग्र समुदाय का यरूशलम पर रुख बहुत साफ है। वह इसे दो हिस्सों में बांट कर देखता है। पश्चिम यरूशलम इस्त्रइल के हिस्से और पूर्वी यरूशलम फिलिस्तीन को देने का पक्षधर है। लेकिन इस्त्रइल यरूशलम को एकीकृत के तौर पर देखता है और सम्पूर्ण हिस्से पर अपना अधिकार जताता है। लेकिन संयुक्त राष्ट्र महासभा के इस प्रस्ताव के बाद इस्त्रइल पर शांति प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का दबाव बढ़ेगा और इस बात की पूरी संभावना है कि उसे फिलिस्तीन को रियायत देनी पड़ेगी।

इस्त्रइल फिलिस्तीन के बीच द्विपक्षीय वार्ता से ही यरूशलम के भाग्य का निर्धारण मुमकिन हो सकता है। भारत ने प्रस्ताव का समर्थन करके अपनी पारम्परिक नीति के प्रति दृढ़ता जाहिर की है जो बातचीत के जरिये इस विवाद के हल का पक्षधर है। हालांकि अमेरिका और इस्त्रइल के साथ बढ़ती नजदीकियों के कारण यह कयास लगाया जा रहा था कि नई दिल्ली-वाशिंगटन के समर्थन में अपना वोट देगा। अगले साल जनवरी में इस्त्रइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू भारत आने वाले हैं। लेकिन भारत विश्व समुदाय के साथ खड़ा हो कर यह दर्शा दिया है कि फिलिस्तीन के प्रति भारत का रुख स्वतंत्र है और कोई अन्य देश इसे प्रभावित नहीं कर सकता। सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से भी भारत के लिए यह आवश्यक था कि अमेरिका-इस्त्रइल के विरुद्ध और विश्व समुदाय के साथ दिखाई दे। इस्त्रइल के पक्ष में खड़ा होने से अरब देशों के साथ संबंध खराब होने का अंदेशा रहता, जो हमारी अस्सी फीसद तेल की आपूत्तर् करते हैं।

कश्मीर के मुद्दे पर पाकिस्तान का शत्रुतापूर्ण रवैया को ध्यान में रखते हुए भी यह भारत के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल नहीं था। इस्त्रइल हमारे लिए अब अछूत नहीं है। 1992 से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध है। इन 25 सालों में दोनों के बीच रक्षा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा है। लेकिन ट्रंप के फैसले के साथ खड़े होने का मतलब फिलिस्तीन व उसकी आकांक्षाओं के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को कमजोर करना होता।

वंदे मातरम् गायन में किसी को परेशानी क्यों होनी चाहिए: नायडू

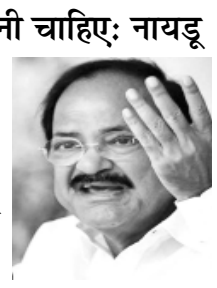

मुम्बई (ईएमएस)। उपराष्ट्रपति एम.वेंकैया नायडू ने आश्चर्य जताया कि किसी को राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् को गाने में परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस गीत का मतलब मां का अभिवादन करना है और इस गीत ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लाखों लोगों को प्रेरित किया था। नायडू ने अहमदनगर जिले में मंदिरों के इस नगर में कहा, मां तस्वीर नहीं है, बल्कि हमारी मातृभूमि है। वंदे मातरम में मां को सलाम किया जाता है। इसे लेकर किसी को कोई समस्या क्यों होनी चाहिए। शिरडी साईबाबा संस्थान द्वारा आयोजित ग्लोबल साईं मंदिर ट्रस्ट सममेलन का उद्घाटन करने के बाद नायडू ने कहा, हमारी जाति, पंथ और धर्म के बावजूद हम एक राष्ट्र, एक व्यक्ति और एक देश है। उन्होंने यह भी कहा कि 20वीं सदी के संत साईंबाबा के हिन्दू या मुसलमान होने का मुद्दा अनावश्यक है। उपराष्ट्रपति ने कहा, वह एक सार्वभौमिक शिक्षक थे, जो हिंदू धर्म और सूफीवाद के महत्वपूर्ण सिद्धांतों का मिश्रण थे। उन्होंने कहा कि मानवता की सेवा और अन्य लोगों के साथ शांति और सद्भाव के साथ रहने की साईंबाबा की शिक्षाओं को सभी लोगों द्वारा अपनाये जाने की जरूरत है, जो साईंबाबा को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा, मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा है। साईंबाबा इस संस्कृति के एक अवतार थे।

कल सिद्धिविनायक मंदिर में होगी चढ़ावे की नीलामी

मुम्बई (ईएमएस)। सिद्धिविनायक मंदिर में चढ़ावे के गहनों की 25 दिसंबर को नीलामी की जाएगी। यह नीलामी सुबह 11 बजे से मंदिर परिसर में होगी। नीलाम की जाने वाली वस्तुओं को सुबह 9 बजे देखा जा सकता है।
मंदिर ट्रस्ट के कार्यकारी संजीव पाटील के अनुसार नीलामी की वस्तुओं में श्रीगणेश प्रतिमा, लॉकेट्स, दूर्वा, मोदक, अंगूठी, सोने की चैन, हार आदि शामिल है। भक्तों द्वारा चढ़ाई गई गहने को मंदिर ट्रस्ट ने नीलाम करने का फैसला किया है। इस नीलामी प्रक्रिया में कोई भी भक्त ऊंची बोली लगाकर प्रसाद के रूप में खरीद सकता है।
नीलामी के पैसे से समाज कार्य - मंदिर में जो पैसे नगद चढ़ाए जाते हैं और चढ़ावे की गहने की नीलामी से मिले पैसे को ट्रस्ट समाज के हित में लगाती है। इसमें स्वास्थ्य और शिक्षा पर विशेष रुप से खर्च की जाती है। पाटील को उम्मीद है कि इस बार नीलामी में भक्त बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे

मुंबई: पुलिस ने बचाई सैकड़ों की जान

मुम्बई। लेटलतीफी और लापरवाही का अक्सर आरोप झेल रही मुंबई + पुलिस की सतर्कता और सूझ-बूझ ने गुरुवार की शाम दक्षणि मुंबई के जावेरी बाजार के शेख मेमन स्ट्रीट स्थित मशहूर 'खाऊ गली' को कब्रिस्तान बनने से बचा लिया चश्मदीदों, पुलिसकर्मियों, बीएमसी कर्मियों, दमकलकर्मियों एवं स्थानीय दुकानदारों से हुई बातचीत के आधार पर पता चला कि गुरुवार शाम को अगर समय रहते मुंबई पुलिस मौके पर नहीं पहुंचती, तो जिस ग्राउंड प्लस तीन मंजिला एनएम दास इमारत का हिस्सा गिरा था, उसके सैकड़ों टन मलबे में दबकर कई लोग मारे जाते।'खाऊ गली' बन जाता कब्रगाह इससे पहले कि 'खाऊ गली' में खा-पी रहे सैकड़ों लोग हादसे का शिकार बनते, जोन-2 के एलटी मार्ग पुलिस स्टेशन + के सीनियर पीआई शरद नाइक को इमारत गिरने की सूचना मिली। स्टेशन हाउस से घर निकलने की तैयारी कर रहे नाइक बिना वक्त गंवाए कुछ पुलिसकर्मियों के साथ सबसे पहले घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने तुरंत वहां से लोगों को हटाना शुरू कर दिया।

कंडोम के एड के बैन की वजह से भारत में बढ़ रहे एडस मरीज: सोफिया

मुम्बई (ईएमएस)। हाल के दिनों में केन्द्र सरकार ने सुबह 6 से रात 10 बजे तक के समय टीवी पर कंडोम एड दिखाने पर बैन लगा दिया है। इस बैन के बाद हो रही बहस में मॉडल सोफिया हयात भी कूद गई हैं। कंडोम बैन पर सोफिया ने कहा,एड दिखाने पर बैन की वजह से भारत में एड्स पीड़ितों की संख्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने कहा कि वो एक नन के रूप में कंडोम का एड करने की इच्छुक हैं। इससे पहले राखी सावंत ने टीवी पर कंडोम एड की समय बदलने पर तीखे सवाल उठाए थे।सोफिया ने राखी के सवालों का समर्थन किया है। सोफिया के मुताबिक़ कंडोम एड को हर समय प्रसारित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा,मैं तो इस बात से हैरान हूं कि अचानक यह विषय इतना बड़ा इश्यू क्यों बनता जा रहा है। इस पर तो हमें खुलकर बात करनी चाहिए,फिर हम विवाद में क्यों फंस रहे हैं। जितना इस लेकर खुलापन रहेगा उतना ही हम अपने बच्चों को सिखा पाएंगे।

शिशु एवं बाल मृत्यु दर में कमी को डीएम का जोर

आज़मगढ़ (ईएमएस)। मात्र एवं बाल पोषण में सुधार के साथ शिशु एवं बाल मृत्यु दर में कमी लाने के लिए जिला प्रसाशन की ओर से कुपोषण की रोकथाम पर बल दिया जा रहा है। जिलाधिकारी चन्द्रभूषण सिंह ने ईएमएस से बातचीत के दौरान बच्चो के कुपोषण से बचाव पर बल दिया और कहा कि मातृ एवं बाल पोषण में सुधार एवं मातृ, शिशु एवं बाल मृत्यु दर में कमी लाने हेतु शासन कृत संकल्प है। 5 वर्ष से कम उम्र के आधे से अधिक बच्चों के मृत्यु का एक प्रमुख कारण मातृ एवं शिशु कुपोषण है। कुपोषण से प्रभावित जो बच्चे जिवित रहते है उनकी भी प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है जिससे वे प्राय: वे बिमार हो जाते है और उनका सम्यक बौधिक एवं शारिरिक विकास नही हो पाता है। यह एक जटिल समस्या है और इसकी रोकथाम में अन्य विभागों के साथ कन्वर्जेन्स एवं समन्वय नितान्त आवश्यक है। विशेष रूप से स्वास्थ्य पोषण एवं स्वच्छता सम्बन्धित उपायों को प्रभावी ढंग से लागू करते हुए कुपोषण की समस्या को समाप्त किया जा सकता है। जिलाधिकारी ने इस कि कुपोषण के दृष्टिगत विभिन्न विभागीय कार्यक्रमों में कन्वर्जेन्स स्थापित करते हुए शासन द्वारा कुपोषण की रोकथाम हेतु सबरी संकल्प योजना संचालित की गयी है। यह योजना प्रदेश के 39 जिलां मे संचालित की गयी है। जिसमें जनपद आजमगढ़ भी सम्मलित है। उन्होने बताया कि योजना का मुख्य उद्देश्य विभागीय कार्यक्रमों में कन्वर्जेन्स स्थापित करते हुए जनपद में 0 से 3 वर्ष आयु के पीली एवं लाल श्रेणी के कुपोषित एवं अति कुपोषित बच्चों में कुपोषण की दर में दिसम्बर 2018 तक 2 प्रतिशत की कमी लाना है। उन्होंने कहा कि शासन के निर्देशानुसार आईसीडीएस कार्यक्रम के सफल क्रियान्यवन हेतु विभिन्न विभागों के समन्वय से सामाजिक जागरूकता एवं समुदाय सहभागिता लाये जाने के उद्देश्य से जनपद, ब्लाक व आंगनवाड़ी केन्द्र पर 16 दिसम्बर से 30 दिसम्बर तक पोषण पखवाड़ा आयोजित किया जा रहा है। जिलाधिकारी ने आईसीडीएस की शिथिल कार्य प्रणाली पर गहरा आक्रोश प्रकट करते हुए कहा कि सीडीपीओ एवं आंगनवाड़ी कार्यकत्री/सुपरवाईजर कुपोषित बच्चों का शत-प्रतिशत चिन्हांकन कर सीएचसी/पीएचसी से रेफर करा कर एनआरसी पर लाने का आदेश दिया गया है। उन्होने कहा कि इस कार्य में लापरवाही बरतने वाले अधिकारी/कर्मचारी को नो वर्क नो पे कर दिया जायेगा।

ब्राम्हण महासभा ने किया नगर पालिका अध्यक्ष, सभासदों का अभिनन्दन

समाज के समक्ष दायित्वों पर खरा उतरें पदाधिकारी: पं. अशोक कुमार शुक्ल

बस्ती (ईएमएस)। ब्राम्हण महासभा द्वारा रविवार को मालवीय रोड स्थित कार्यालय पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. अशोक कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में निकाय चुनाव के नव निर्वाचित अध्यक्ष, सभासदों का स्वागत करते हुये उन्हें अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया।

पं. अशोक कुमार शुक्ल ने कहा कि ब्राम्हण प्राणि मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। राजनीति सेवा का माध्यम है और उसी अनुरूप निर्वाचित पदाधिकारी समाज के समक्ष अपने दायित्वों पर खरा उतरें।

इसी क्रम में युवा ब्राम्हण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हेमन्त कुमार मिश्र के प्रस्ताव पर सर्व सम्मत से सन्तोष शुक्ल को युवा ब्राम्हण महासभा का कोषाध्यक्ष घोषित किया गया। हेमन्त मिश्र ने कहा कि महासभा का विस्तार करके ही सृजन के कायी को पूर्ण किया जा सकेगा।

इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती रूपम मिश्रा, भाजपा नेता पुष्कर मिश्र, सभासद सोनू पाण्डेय, विपिन राय, विशाल शुक्ल, आशीष शुक्ल, परमेश्वर शुक्ल 'पप्पू' सचिन शुक्ल को अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर ब्राम्हण महासभा के पदाधिकारियों ने उनका अभिनन्दन करने के साथ ही दायित्वों के प्रति चेताया भी। कार्यक्रम का संचालन शांति भूषण त्रिपाठी ने किया।

कार्यक्रम को महामंत्री शम्भूनाथ मिश्र, विजय बिहारी तिवारी, डा. वीरेन्द्र तिवारी, हेमन्त कुमार मिश्र, युवा अध्यक्ष हेमन्त कुमार मिश्र, विकास उपाध्याय, दुर्गेश कुमार मिश्र, बनकटी ब्लाक अध्यक्ष हरिशंकर पाण्डेय, लल्लू पाण्डेय, अमरेन्द्र कुमार शिबलू पाण्डेय, इ. राधेश्याम पाण्डेय, कौशल तिवारी, पं. सरोज मिश्र, अभिषेक शुक्ल, शैलेन्द्र शर्मा, दीन दयाल तिवारी आदि ने सम्बोधित किया। कहा कि आज समाज में ब्राम्हण नेतृत्व के विस्तार की आवश्यकता है।

सम्मान समारोह में पुष्पलता पाण्डेय, शीला पाठक, किरन शुक्ला, राजन पाण्डेय, बन्टी मिश्र, राजेश्वर त्रिपाठी, दिवाकर मिश्र, प्रमोद दूबे, चन्द्रमणि मिश्र, मनीष पाण्डेय, रामू पाठक, आलोक पाण्डेय, राम सेवक पाण्डेय, दुर्गेश कुमार मिश्र, जय प्रकाश गोस्वामी के साथ ही बड़ी संख्या में ब्राम्हण महासभा के पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं समाज के विशिष्ट जन उपस्थित रहे।

ऊपरी अदालत से लालू को मिलेगा न्याय : शरद यादव

पटना (ईएमएस)। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल प्रमुख लालू प्रसाद यादव को रांची की सीबीआई अदालत ने देवघर चारा घोटाला मामले में दोषी करार दिया है। जेडीयू के बागी नेता शरद यादव ने उम्मीद जताई कि लालू प्रसाद को ऊपरी अदालत से न्याय मिलेगा। उन्होंने कहा ऐसे कई लोग हैं, जो इस मामले में अभियुक्त बनाए गए थे, लेकिन उन्हें बरी कर दिया गया है।

सीपीएम नेता सीताराम येचुरी ने कहा कि अगर लालू पर इस केस में आरोप साबित हुए हैं तो उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। इस मामले के जरिए सीताराम येचुरी ने मोदी सरकार पर भी हमला बोला। उन्होंने कहा उनकी सरकार का यह दोहरा मापदंड ठीक नहीं है। भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार ही होता है। चाहे वो सृजन घोटाला हो, पनामा पेपर्स, व्यापमं घोटाला या फिर अमित शाह के बेटे द्वारा किया गया घोटाला हो, सबके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। कानून सबके लिए समान है। इससे पहले केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने लालू प्रसाद यादव के बारे में कहा था कि वह फैसले को स्वीकार करने की जगह मुद्दे का राजनीतिकरण कर रहे हैं। मुद्दे से ध्यान हटाने के लिए वह भाजपा पर साजिश के आरोप लगा रहे हैं। वहीं कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि कोर्ट के फैसले पर कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। राम विलास पासवान ने कहा कि लालू ने अपने साथ-साथ पूरे परिवार को डुबो दिया।

अन्नदाता खुशहाल होगा तो देश का विकास स्वत: हो जाएगा: योगी

बागपत में योगी ने किसानों के लिए खोला विकास योजनाओं का पिटारा

बागपत (ईएमएस)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि अन्नदाता खुशहाल होगा तो देश का विकास स्वत: हो जाएगा। योगी शनिवार को रमाला स्थित चीनी मिल की पेराई क्षमता में वृद्धि के शिलान्यास समारोह में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि देश का अन्नदाता खुशहाल होगा तो प्रदेश का विकास होगा। जब प्रदेश का विकास होगा तो देश का विकास स्वत: ही हो जाएगा। उन्होंने किसानों के विकास के लिए करीब 500 करोड़ रुपए की विकास योजनाओं को हरी झंडी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने किसानों के लिए 70 हजार करोड़ की धनराशि खर्च करने का प्रावधान किया है। इसके तहत किसानों की कई विकास योजनाओं को अमलीजामा पहनाया जाएगा। योगी ने मिलों की पेराई क्षमता बढ़ाने के लिए 302 करोड़ रुपए की राशि खर्च करने का ऐलान किया। अब प्रदेश के किसानों, व्यापारियों तथा युवाओं को किसी भी अन्याय का सामना नहीं करना पड़ेगा। प्रदेश सरकार में युवाओं का हित सवोपरि है। उन्होंने कहा कि अगले चालू वर्ष में पुलिस विभाग में एक लाख 30 हजार पुलिसकर्मियों की भर्ती की जाएगी। मुख्यमंत्री ने उद्यमियों से आह्वान किया कि वे प्रदेश में निवेश करें, इसके बदले सरकार उनको सुरक्षा एवं सुविधा की गारंटी देगी।

अटल जी इस सदी के युग पुरूष है: सांसद लल्लू सिंह

फैजाबाद (ईएमएस) 24 दिसम्बर 2017। भाजपा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस को ऐतिहासिक रूप से मनायेगी। आगामी 25 दिसम्बर को उनके जन्मदिन पर जिले के सभी बूथो पर पार्टी कार्यकर्ता समारोह पूर्वक जन्मदिवस का आयोजन कर उस दिन को सुशासन दिवस के रूप में भव्यता के साथ मनायेंगे। 25 दिसम्बर सोमवार को रात्रि 9 बजे स्वयंवर लॉन में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें भारत के कई ख्यातिलब्ध कवियों का कविता पाठ होगा। इससे पहले एलईडी प्रोजेक्टर के माध्यम से पूर्व प्रधानमंत्री जी के जीवनवृत एवं उनके द्वारा लिखी गयी ऐतिहासिक कविताओं पर आधारित डाक्यूमेंटरी फिल्म दिखायी जायेगी। कवि सम्मेलन का आयोजन फैजाबाद के सांसद लल्लू सिंह के संयोजकत्व में होगा।

इस बाबत शनिवार को पार्टी कार्यालय पर बैठककर कार्यक्रम की कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया गया। इस अवसर पर सांसद लल्लू सिंह ने कहा कि अटल जी इस सदी के युग पुरूष है उनके द्वारा स्थापित परम्परायें एवं मूल्य आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श है। हमें उनके जीवन के बारे में पढ़ना एवं जानना चाहिए तथा उनका अनुसरण कर भारत को वैभवशाली बनाने के लिए कार्य करना चाहिए। जिलाध्यक्ष अवधेश पाण्डेय बादल ने बताया कि कार्यक्रम को दिव्य और भव्य बनाने के लिए पूरी तैयारी कर ली गयी है। पूरे जनपद के देहात क्षेत्रों को सेक्टरो में विभाजित कर प्रत्येक बूथ पर कार्यक्रम मनाया जाये इसके लिए जिम्मेदारी तय कर दी गयी हैं। नगरीय क्षेत्रों में जन्मदिवस का कार्यक्रम वार्डसह होगा।

यदि मांग नहीं मानी तो सरकार की ईंट से ईंट बजा देंगे: आनन्दसेन यादव

फैजाबाद (ईएमएस) 24 दिसम्बर 2017। उ0प्र0 की योगी सरकार ने यदि मांगों को नहीं माना तो सरकार की ईंट से ईंट बजा देंगे। इसके लिये चाहे समाजवादी पार्टी के लोगों को जेल जाना पड़े। सरकार को मांगों को पूरा करना होगा। यह बातें किसानों के नेता चौधरी चरण सिंह की जयन्ती के मौके पर शनिवार को समाजवादी पार्टी बीकापुर विधान सभा तहसील में आयोजित एक दिवसीय धरने को सम्बोधित करते हुए सपा नेता व पूर्व मंत्री आनन्दसेन यादव ने धरने पर बैठे मौजूद लोगों से कहीं।

धरने की शुरूआत चौधरी चरण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। धरने में मुख्य रूप से आवारा पशुओं से तबाही, पिपरी में अवैध टोल टैक्स वसूली, दलित छात्रा शिवानी हत्याकाण्ड में पुलिस की लापरवाही, बिजली दरों में भारी वृद्धि व सरकार की किसान विरोधी नीतियों आदि समस्याओं के खिलाफ श्री यादव ने आन्दोलन का बिगुल फूंका। श्री यादव ने कहा कि सरकार की तानाशाही व मानमानी नहीं चलेगी। उन्होंने कहा कि पूरे जनपद में लूट, हत्या, डकैती, चोरी व दुष्कर्म की घटनायें बम्पर तरीके से हो रही हैं। कानून नाम की कहीं भी कोई चीज नहीं बची। अपराध चरम सीमा पर है। पुलिस की मनमानी और पुलिस का डण्डा गरीबों व किसानों पर पीठ पर चल रहा है।

इस सरकार में छात्र-छात्रायें सुरक्षति नहीं हैं। व्यापारी इस सरकार की नीतियों से तंग हो चुका है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की योगी व केन्द्र की मोदी सरकार ने जनहित की सभी योजनाओं को बन्द कर दिया है। धरने में मौजूद पूर्व राज्यमंत्री तेजनारायण पाण्डेय पवन ने कहा कि भाजपा की खराब नीतियों के कारण प्रदेश का आम जनमानस अपने आपको ढगा महसूस कर रहा है। उन्होंने कहा कि छुट्टा जानवरों से लोग परेशान हैं।

विधान परिषद सदस्य लीलावती कुशवाहा ने कहा कि योगी सरकार ने गरीब महिलाओं को मिलने वाली समाजवादी पेंशन को बन्द कर दिया गया है जिससे लाखों महिलाओं को मिलने वाली पेंशन बन्द हो गयी है। जिससे महिलायें परेशान हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार ने महिलाओं व छात्राओं से आये दिन दुष्कर्म की घटनायें हो रही हैं। धरने मे मौजूद गोशाईगंज के पूर्व विधायक अभय सिंह ने कहा कि प्रदेश के हालात अच्छे नहीं हैं।

तीन तलाक पर घमासान, मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड ने कहा राय नहीं ली तो करेंगे विरोध

लखनऊ (ईएमएस)। मुस्लिम समाज में तीन तलाक के प्रचलन को सुप्रीम कोर्ट द्वारा अवैध घोषित के बाद केंद्र सरकार इसको प्रतिबंधित करने के लिए अगले सप्ताह संसद में विधेयक पेश करने वाली है। पहले इस विधेयक को संसद के शुरुआती सप्ताह में ही पेश किया जाने वाला था, लेकिन गुजरात चुनाव के दौरा ?न प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कांग्रेस के पाक संपर्कों पर की गई टिप्पणी की वजह से संसद में पैदा हुए गतिरोध की वजह यह विधेयक नहीं पेश किया जा सका। प्रस्तावित विधेयक का ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने विरोध किया है। मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड ने कहा है कि अगर सरकार ने उससे चर्चा किए बगैर यह विधेयक संसद में पेश किया तो वह इसका विरोध करेगी। इस संबंध में बोर्ड ने रविवार को लखनऊ में होने वाली बैठक में सरकार के कदम पर चर्चा की जाएगी। इस आपात बैठक में शामिल होने के लिए बोर्ड की कार्य समिति के सभी 51 सदस्यों के बुलाया गया है। बैठक में शिरकत करने बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना राबे हसन नदवी पहुंच गए हैं। वहीं बोर्ड के महासचिव मौलना सईद वली रहमानी के अलावा सेक्रेटरी मौलना खालिद सैफुल्लाह रहमानी, ख़लीलुल रहमान सज्जाद नौमानी, मौलाना फजलुर रहीम, मौलाना सलमान हुसैनी नदवी भी पहुंचे हैं। इस बैठक का नतीजा सायं पांच बजे के आसपास घोषित किया जाएगा।

सार्वजनिक जमीनों से अबैध कब्जेदारों के खिलाफ अभियान

आजमगढ़ईएमएस। जिलाधिकारी चन्द्र भूषण सिंह ने उप जिलाधिकारियां /तहसीलदारों को निर्देश दिए कि एक अभियान के तहत सार्वजनिक स्थलों एवं सरकारी भूमि से अतिक्रमण/अवैध कब्जा हटवाते हुए अतिक्रमण/अवैध कब्जादारों के विरूद्ध कार्यवाही सुनिश्चित करें। उक्त निर्देश जिलाधिकारी ने कैम्प कार्यालय पर आयोजित बैठक में दिए।

इस अवसर पर उन्होने कहा कि एसडीएम/तहसीलदार अपने-अपने तहसील में ऐसे प्रकरणों को चिन्हित कर ले तथा उप जिलाधिकारी/तहसीलदार साथ-साथ एवं लेखपाल 10 मामलां को निपटाते हुए मय फोटग्राफ्स रिपोर्ट प्रस्तुत करे इस प्रकार प्रति माह प्रत्येक तहसील में 50 मामलों का निस्तारण होना चाहिए। उन्होने यह भी कहा कि तहसील में 5 एकड़ से बड़े चारागाहां को चिन्हित कर रिपोर्ट दे तथा प्रति तहसील कम से कम 5 एवं अधिकतम 10 का चिन्हिकरण कर सीमांकन करें।

उन्होने इस अवसर पर वोटर लिस्ट का पुनरीक्षण, ठण्ड के दृष्टिगत कम्बल वितरण, अलाव जलाने के साथ ही कहा कि ठण्ड से कोई मृत्यु नही होनी चाहिए।

ठंड से बचाव को 13 निकायों में रैन बसेरा की स्थापना

आजमगढ़ (ईएमएस)। जिलाधिकारी चन्द्र भूषण सिंह ने बताया है कि ठण्ड को दृष्टगत रखते हुए जनपद की 13 स्थानीय निकायों में आवश्यक व्यवस्थाओं के साथ रैन बसेरां की स्थापना की गयी है। जिसमें गरीब, असहाय, जरूरतमंद व्यक्ति रह सकते है। जिलाधिकारी ने स्थानीय निकायों में स्थापित किए गये रैनबसेरों के स्थान के सम्बन्ध मे जानकारी देते हुए बताया है कि नगर पालिका परिषद आजमगढ़ में कलेक्ट्रेट के सामने सिविल लाइन, नगर पालिका परिषद मुबारकपुर भवन के उपर मिटिंग हाल में, नगर पंचायत सरायमीर में वार्ड नं0-10 ठठेरी बाजार, निजामाबाद में वार्ड नं0-1 शिवाला घाट, फूलपुर में बाबा परमहंश स्थित सामुदायिक भवन, माहुल में वार्ड नं0-3 गांधीनगर, अतरौलिया में शम्मोमाता स्थित सामुदायिक भवन, महराजगंज में नगर पंचायत कार्यालय के नीचे, बिलरियागंज में टैक्सी स्टैण्ड के बगल में हरिहर गुप्ता के मकान में, जीयनपुर में सब्जी मण्डी के निकट हरिश्चन्द यादव के मकान में, अजमतगढ़ में नगर पंचायत कार्यालय के सामने, मेंहनगर में निरंजन पोखरा कुटी के पास सामुदायिक भवन तथा लालगंज में हनुमान जी मंदिर कैम्पस में निर्मित मैरेजहाल में स्थापित किया गया है।

ठण्ड को दृष्टगत रखते हुए जनपद की 13 स्थानीय निकायों में आवश्यक व्यवस्थाओं के साथ रैन बसेरां की स्थापना की गयी है। जिसमें गरीब, असहाय, जरूरतमंद व्यक्ति रह सकते है। जिलाधिकारी ने स्थानीय निकायों में स्थापित किए गये रैनबसेरों के स्थान के सम्बन्ध मे जानकारी देते हुए बताया है। रैन बसेरा में रजाई, गद्दा, तख्ता आदि से सुसज्जित करते हुए साफ-सफाई आदि की व्यवस्था मुकबल है।

दारुल उलूम का फतवा, चुनाव में तोहफे में मिले मुसल्ला पर नमाज जायज नहीं

देबबंद (ईएमएस)। दारुल उलूम ने कहा है कि चुनाव के दौरान मतदाताओं को किसी तरह के भी उपहार से बचना चाहिए। नगर के मोहल्ला कायस्थवाड़ा निवासी अधिवक्ता राघवेंद्र कंसल ने दारुल उलूम देवबंद से ऑनलाइन सवाल कर पूछा था कि क्या किसी प्रत्याशी द्वारा मुस्लिम समाज के लोगों को चुनाव के दौरान बांटे गए जानमाज (मुसल्ले) पर नमाज अदा की जा सकती है? इस सवाल के जवाब में दारुल उलूम देवबंद के इफ्ता विभाग ने फतवा संख्या 320/276 में जवाब देते हुए कहा कि चुनाव के दौरान बांटी गई चीजों का उद्देश्य सिर्फ वोट हासिल करना होता है। चुनाव के दौरान बांटे जाने वाले तोहफों से बचना चाहिए।

इतना ही नहीं यदि किसी व्यक्ति द्वारा इसी उद्देश्य से जानमाज (मुसल्ला) बांटा गया है तो उस जानमाज पर भी नमाज पढ़ना गलत है, इसलिए चुनाव के दौरान मिली जनमाज पर नमाज पढ़ने से बचना चाहिए।

सूरत। कार्यकारी मुख्य मंत्री विजय रूपाणी वलसाड के उदवाड़ा में होने वाले उत्सव में हाजरी देकर देर शाम सूरत एयरपोर्ट पर उतरे। जहा मेयर अस्मिता बेन शिरोया सांसद दर्शना बेन जरदोश, सासंद सी.आर.पाटील, नवनिर्वाचित विधायक वी.डी झाला वडीया, अरविंद राणा, कांतिभाई बलर, संगीतापाटिल, शहर भाजपा प्रमुख नीतिन भाई भजिया वाला झंखनाबेन पटेल, पुलिस कमिश्नर सतीश शर्मा, मनपा कमिश्नर थेन्नारसन, अतिरक्त निवासी कलेक्टर संजय वसावा सहित कई पदाधिकारियों ने पुष्प गुच्छ से स्वागत किया।

गुंडा टैक्स न देने वाले व्यापारी पुत्र पर जानलेवा हमला

सूरत। कडोदरा में अवैध वसूली के पैसे न देने वाले व्यापारी के पुत्र पर हमला किए जाने से क्षेत्र में समसनी मच गई। व्यापारी के पुत्र को बुलाकर चार से अधिक हमलावरों द्वारा लोहे की पाइप और डंडे से मारकर घायल कर देने से इलाज के लिए उसे अस्पताल में भर्ती किया गया। समग्र घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद होने पर उसके आधार पर पुलिस जांच कर रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कडोदरा क्षेत्र में इंजीनियरिंग का वर्कशॉप चलाने वाले व्यापारी अनिल पांडे के पुत्र को हमलावरों ने बाहर बुलाकर हमला कर दिया। जानकारी के अनुसार उसे अवैध वसूली के लिए पिछले एक माह से लगातार धमकी दी जा रही थी। व्यापारियों ने जिला पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई है। जबकि रिपोर्ट को वापस लेने के लिए व्यापारी पर दबाव बनाया गया था। बार-बार धमकी के बाद रिपोर्ट को वापस न लेने पर व्यापारी के पुत्र को कडोदरा क्षेत्र की मिल के बाहर बुलाकर चार से अधिक हमलावरों ने लाठी और लोहे की पाइप से हमला करके गंभीर रूप से घायल कर दिया।

घायल युवक को इलाज के लिए सूरत की अस्पताल में भर्ती किया गया है। गुंडा टैक्स के विषय में एक महीना पहले पुलिस में शिकायत दर्ज की गई थी। जबकि असामाजिक तत्त्व शिकायतकर्ता से रिपोर्ट को वापस करने के लिए दबाव बना रहे थे।

सीसीटीवी कैमरे में कैद घयना के आधार पर पुलिस हमलावरों को पकड़े की कवायद में जुट गई है।

स्थानीय नेताओं की जीद की वजह से कांग्रेस ने गंवाई महुवा सीट

अहमदाबाद (ईएमएस)। भावनगर की निर्दलीय उम्मीदवार कनुभाई कलसरिया का आरोप है कि स्थानीय नेताओं की जीद की वजह से कांग्रेस ने महुवा सीट गंवाई है।

विधानसभा चुनाव में कनुभाई कलसरिया ने भावनगर की महुवा सीट से निर्दलीय उम्मीदवारी करने से पहले कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और गुजरात प्रभारी अशोक गहलोत से बातचीत की थी। जिसमें महुवा सीट से कांग्रेस उम्मीदवार नहीं उतारने की बात ही थी। इसके बावजूद स्थानीय नेताओं की जीद की वजह से महुवा सीट से कांग्रेस उम्मीदवार को उतारा गया।

मनपा लिंबायत में रैन बसेरा बनाने को तत्पर

सूरत। शहर के लिंबायत क्षेत्र में मनपा रैन बसेरा बनाने की फिराक में है। तकरीबन 150 से अधिक बेड के रैन बसेरे का निर्माण किए जाने की जानकारी मिली है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सूरत महानगरपालिका इस रैन बसेरा को लिंबायत के अलावा डिंडोली में भी बनाने की योजना को अमली जामा पहनाने की तैयारी कर रही है। इसके लिए टेंडर भी जारी कर दिया गया है। इस योजना के तहत मनपा की सीमा में न होने वाले क्षेत्रों को भी विकसित किया जाएगा। रैन बसेरा बन जाने से बाहर से आने वाले तथा श्रमिक वर्ग के लोगों को काफी राहत मिल सकेगी। मनपा लाइब्रेरी, सड़क और फुटपाथ पर यत्र-तत्र रात गुजारने वाले लोगों को विशेष सुविधा देने की कोशिश में लगी है। सूरत में लगभग 55 प्रतिशत से अधिक लोग शहर के बाहर से काम करने आते हैं। इनमें से अधिकांश दिहाड़ी मजदूर होते है। जो रात में ओवर ब्रिज के नीचे व किसी सड़क के किनारे फुटपाथ पर रात गुजारने के लिए मजबूर होते हैं। ऐसे लोगों को काफी राहत मिली है।

सिविल अस्पताल में रैन बसेरा नहीं, गैलरी में सो रहे लोग

न्यू सिविल अस्पताल में दूर-दूर से लोग उपचार के लिए आते हैं। जिनके साथ उनके परिजन भी होते हैं। परन्तु यहां उन्हें रात गुजारने के लिए कोई रैन बसेरा न होने के कारण गैलरी में सोना पड़ता है। लेकिन सुरक्षाकर्मी के द्वारा कुछ दिनों से मरीजों के परिजनों को वार्ड व अस्पताल परिसर से बाहर निकाल देते हैं। जिससे कड़कड़ाती ठंड में रात गुजराने के लिए मजबूर है।

ओरो यूनिवर्सिटी में हुआ पांचवा पदवीदान समारोह

सूरत। ओरो यूनिवर्सिटी में गत रोज पांचवें पदवीदान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में केन्द्रीय फाइनेंस विभाग के सेक्रेटरी हसमुख अढिया सहित कई महानुभाव हाजिर थे। ओरो यूनिवर्सिटी कैंपस में आयोजित इस समारोह में एमबीए, बीबीए, बीएससीआईटी, बीएस हॉस्पिटेलिटी, बीबीए एलएलबी के 155 विद्यार्थियों को डिग्री देकर गोल्ड, सिल्वर, ब्रॉन्ज मेडल और सर्टीफिकेट के साथ सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हसमुख अढिया ने छात्रों को सफलता का टिप्स देते हुए कहा कि जीवन में सभी कार्य मन से करने वालों को सफलता मिलती ही है।

इस दौरान उन्होंने अपनी सफलता के कई उदाहरण भी दिए। छात्रों को डिग्री के साथ में जीवन के दौरान जिज्ञाशु रहने का प्रोत्साहन दिया।

योगी चौक में चोरों की धमाल चौकड़ी

मेडिकल स्टोर को नशाना बनाकर नकदी और कीमती दवाओं को लेकर फरार हो गए

सूरत। योगी चौक सहित शहर के कई क्षेत्रों में चोरों का त्रास बढ़ता जा रहा है। गत रोज चोरों ने मेडिकल स्टोर को निशाना बनाया। चोरों ने अपने चेहरे पर रुमाल बांधकर मेडिकल स्टोर में प्रवेश किया और ताला तोड़कर वहां से नकदी आदि सामान चोरी करके फरार हो गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार योगी चौक मानसरोवर सोसाइटी के बगल रामदेव रो-हाउस में रहने वाले दीपेश मनजी दामेलिया अपने विस्तार में ही मेडिकल स्टोर चलाते हैं। गत रोज आधी रात को दीपेश के मेडिकल स्टोर में दो चोर चेहरे पर रुमाल व हाथ में मोजा पहनकर अंदर प्रवेश किए और ताला तोड़कर वहां रखी नकदी और दावाएं चोरी करके फरार हो गए। जबकि चोरों की करतूत वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। दुकान मालिक ने सरथाणा पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराया है। पुलिस सीसीटीवी के आधार पर मामले की जांच कर रही है।

अटलादरा क्षेत्र में त्यागी गई 14 महीने की बच्ची मिली, पुलिस जांच शुरू

वडोदरा (ईएमएस)। शहर के अटलादरा क्षेत्र में त्यागी गई एक मासूम बच्ची मिली है। करीब 14 महीने की इस बच्ची को कोई वेराई माता के मंदिर के पास छोड़कर फरार हो गया। एक थैली में चद्दर से लिपटी मासूम बच्ची को देख स्थानीय सब्जी व्यापारी ने पुलिस को खबर दी। घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने बच्ची का कब्जा लिया। फिलहाल वडोदरा के वार्ड संख्या 12 की भाजपा नगर पार्षद दक्षा पटेल बच्ची की देखभाल कर रही हैं।

20 लाख रुपए से अधिक की डिपॉजिट के बाद रिटर्न न भरने वालों को अल्टीमेटम

सूरत। ठीक एक साल के बाद आईटी में नोटबंदी का भूत फिर से सवार होता लग रहा है। 8 नवंबर 2016 के बाद बैंक में 20 लाख से अधिक की डिपॉजिट करके अभी तक रिटर्न फाइल न करने वाले खाताधारकों को आयकर की नोटिस मिल रही है। जिसमें 30 दिन के अंदर रिटर्न भर देने का अल्टीमेटम दिया गया है। ऐसा न करने पर पेनाल्टी और ब्याज दोनों की मार सहने की नौबत खाताधारकों को भोगनी पड़ेगी।

आयकर विभाग द्वारा दी गई इस तरह की चेतावनी से 20 लाख रुपए से अधिक राशि के खाता धारकों में खलबली मच गई है। नोटिस मिलने से खाताधारक अब संबंधित सीए के यहां चक्कर लगाना शुरू कर दिए हैं।

चार साल की बच्ची से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

नवसारी (ईएमएस)। जिले के विजलपोर में एक शख्स द्वारा 4 चाल की बच्ची से दुष्कर्म किए जाने की घटना सामने आई है। पुलिस ने चंद घंटों में दुष्कर्मी को गिरफ्तार कर कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी।

जानकारी के मुताबिक नवसारी जिले के विजलपोर में उत्तर प्रदेश मूल का परिवार रहता है। पड़ौस में रहनेवाले आसिफ पठान नामक युवक परिवार की बच्ची को खिलाने के लिए बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया। जहां आसिफ ने चार साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म किया। बाद में पकड़े जाने के डर से आसिफ ने बच्ची को एक बोरी में डालकर रेलवे ट्रेक के निकट फैंक दिया और वहां से फरार हो गया। बच्ची के लापता होने पर माता-पिता समेत परिवार के अन्य सदस्य उसकी खोजबीन में जुट गए। दूसरी ओर रेलवे ट्रेक के निकट से एक युवक गुजर रहा था, जिसने बच्ची के रोने की आवाज सुनकर पास की झाडी में देखा तो बच्ची की हालत देख वह स्तब्ध रह गया। युवक ने फौरन पुलिस को सूचना देकर बच्ची को नवसारी के सिविल अस्पताल पहुंचाया। जहां बच्ची की हालत स्थिर है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चंद घंटों में आरोपी आसिफ पठान को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस की पूछताछ में आसिफ ने अपना गुनाह कबूल कर लिया है।

फरवरी में 1423 ग्राम पंचायत और 75 नगर पालिकाओं के चुनाव

अहमदाबाद(ईएमएस)। गुजरात विधानसभा चुनाव प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद अब अगले साल फरवरी में ग्राम पंचायत व नगर पालिका तथा मार्च में राज्यसभा की चार सीटों के लिए चुनाव होना है। 26 दिसंबर को शपथ ग्रहण करने के बाद नई सरकार अगले तीन महीनों के दौरान इलेक्शन मोड में रहेगी। इसी दौरान विधानसभा का बजट सत्र भी है, जिससे प्रशासनिक और चुनावी दोनों कार्यवाही पर सरकार को ध्यान देना पड़ेगा। फरवरी 2018 में राज्य की 1423 ग्राम पंचायतों, 75 नगर पालिका, 2 जिला पंचायत और 17 तहसील पंचायतों के चुनाव के लिए निर्वाचन आयोग ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। जनवरी महीने के दौरान इसके लिए अधिसूचना जारी की जाएगी। विधानसभा चुनाव में भाजपा को ग्रामीण क्षेत्रों में काफी नुकसान हुआ है। ग्राम पंचायत के चुनाव पार्टी चिह्न नहीं लड़े जाते, परंतु उस पर राजनीतिक दलों का प्रभाव जरूर रहता है। भाजपा को ग्रामीण इलाकों ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। फरवरी में स्थानीय निकायों के चुनावों के बाद मार्च में राज्यसभा की रिक्त होनेवाली चार सीटों पर चुनाव कराया जाएगा। विधानसभा में भाजपा का संख्याबल कम होने की वजह से भाजपा के कब्जेवाली 4 सीटों में से 2 सीटें कांग्रेस के खाते में जाएंगी।

सत्संग में बही भक्ति की रसधार

राम जन्म कथा प्रसंग के दौरान जमकर झूमे श्रोता

सूरत। पांडेसरा इलाके के श्री शुभ लक्ष्मी स्वास्तिक नगर सोसायटी में स्थित मां विध्यवासिनी धाम श्री विश्वकर्मा मंदिर में रविवार को सप्ताहिक सत्संग का आयोजन किया गया। सत्संग के दौरान कथा वाचक वासुदेवानंद जी महाराज ने अपने मधुरवाणी से श्रीराम जन्म, नारदमोह प्रसंग का रसपान कराया। उन्होंने कहा कि चक्रवर्ती राजा दशरथ ने पुत्र की कामना से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया।

राम जन्म की खुशी में राजा दशरथ ने जमकर उपहार बांटा। उन्होंने रावण जन्म और नारद मोह का प्रसंग सुनाकर श्रोताओं को झूमने पर विवश कर दिया। सत्संग के दौरान गणेश विश्वकर्मा, राजू विश्वकर्मा, विवेक रमेश सक्सेना, गीता सिंह राधे-राधे, मधु दूबे, सुमित्रा यादव, प्रेमा देवी, पुष्पादेवी शीलू विश्वकर्मा, आरती विश्कर्मा, मालती देवी, रानी देवी, अनिल सिंह सहित काफी तादाद में श्रोता मौजूद रहे।

रेलवे ट्रेक पर टायर जलाने के मामले पास के 3 कार्यकर्ता गिरफ्तार

मेहसाणा (ईएमएस)। चार महीने पहले जिले के विजापुर रेलवे ट्रेक पर टायर जलाने के मामले में पुलिस ने पास के तीन कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया। हांलाकि तीनों को अदालत से अग्रिम जमानत मिल चुकी थी, जिससे पुलिस ने 10 हजार की जमान पर तीनों को रिहा कर दिया।

पास नेता हार्दिक पटेल की गिरफ्तारी के विरोध में गत 29 अगस्त की रात 9.30 बजे मेहसाणा जिले के विजापुर के मोतीपुरा रेलवे क्रोसिंग के निकट रेल ट्रेक टायर जलाने का वीडियो और तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हुए थे। इस मामले में विजापुर पुलिस थाने के एएसआई गांडालाल मगनभाई की शिकायत के आधार पर घटनास्थल से अभिक रमेशभाई पटेल को गिरफ्तार किया गया था। जबकि अन्य वांटेड घोषित किया गया था। विजापुर पुलिस ने इस मामले में रणासण के दीपक विट्ठलभाई पटेल, खरोड के मयंक रमणभाई पटेल और मणीपुर के रूपल पटेल को गिरफ्तार किया था। तीनों को अदालत से पहले ही अग्रिम जमानत मिल चुकी थी।

सड़क दुर्घटना में बच्चे समेत 5 की मौत, 3 गंभीर

अहमदाबाद (ईएमएस)। जिले के बरवाला के निकट बोटाद से सूरत की ओर जा रही एक तेज रफ्तार कार नील गाय से टकराकर पलटी खा गई। इस हादसे में कार में सवार 8 साल के बच्चे समेत पांच लोगों की मौत हो गई। जबकि तीन लोग घायल हो गए। नीलगाय ने भी घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया। जानकारी के मुताबिक बोटाद से कार में सवार होकर 8 लोग सूरत में आयोजित शादी समारोह में शामिल होने जा रहे थे। रास्ते में बरवाला तहसील के खाबड़ा गांव के निकट एक नीलगाय अचानक सड़क पर आ गई। अंधेरा और तेज रफ्तार के कारण ड्राइवर स्टेयरिंग पर नियंत्रण नहीं रख पाया और कार नील गाय से टकरा गई। दुर्घटना इतनी भीषण थी कि कार में सवार तीन लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। जिसमें एक 8 साल का बच्चा भी शामिल है। जबकि अन्य पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे में नीलगाय ने भी घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया। हादसे के बाद आसपास के लोग घटनास्थल पर जमा हो गए और पुलिस व एम्ब्युलैंस 108 को सूचना दी तथा कार में फंसे लोगों का बाहर निकालने की कार्यवाही शुरू कर दी। घटनास्थल पर पहुंची एम्ब्युलैंस 108 घायलों का प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें बरवाला अस्पताल के लिए रवाना हुई। लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले और दो लोगों की मौत हो गई। इस प्रकार हादसे में 5 पांच लोगों की मौत हो गई। जिसमें कार चालक कालूभाई परमार, छोटाभाई तलसाणिया, पाछुबेन तलसाणिया, 8 वर्षीय संदीप संजयभाई शामिल हैं।

एनसीपी विधायक कांधल जाडेजा के खिलाफ एक और मामला दर्ज

पोरबंदर (ईएमएस)। जिले की कुतियाणा विधानसभा सीट से एनसीपी के नवनिर्वाचित कांधल जाडेजा के खिलाफ एक और मामला दर्ज हो गया है। पहले राणावाव पुलिस थाने में घुसकर तोड़फोड़ करने और नगरपालिका के पूर्व प्रमुख सामंत ओडेदरा के साथ मारपीट करने का मामला दर्ज किया गया। अब उनके खिलाफ सामंत ओडेदरा के पेट्रोल पंप पर तोड़फोड़ करने का केस दर्ज किया गया है। चुनावी रंजिश को लेकर हाल ही में कांधल जाडेजा समेत उनके समर्थकों ने कुतियाणा पुलिस थाने में सामंत ओडेदरा के साथ मारपीट की थी। इतना ही नहीं पुलिस थाने में व्यापक तोड़फोड़ भी की थी।

नतीजों के 45 दिन बाद ईवीएम का डाटा और वीवीपेट की स्लीप नष्ट की जाएंगी

राजकोट (ईएमएस)। गुजरात विधानसभा चुनाव के नतीजों की घोषणा किए जाने के 45 दिन के बाद ईवीएम का डाटा डिलीट और वीवीपेट की स्लीप नष्ट कर दी जाएंगी। गुजरात विधानसभा चुनाव में इस बार पहली दफा वीवीपेट का इस्तेमाल किया गया था। जिसकी वजह से मतदान के दिन ईवीएम और वीवीपेट में तकनीकी समस्या की कई घटनाएं सामने आई थीं। जिसकी वजह से कई जगह मतदान में देरी हुई थी। हांलाकि अब चुनाव नतीजों की घोषणा के छह दिन बीत चुके हैं और ईवीएम में संग्रहित मतदान का पूरा डाटा और वीवीपेट से निकली स्लीप को परिणाम की तारीख से 45 दिन बाद नष्ट कर दिया जाएगा। राजकोट जिले के उप चुनाव अधिकारी के मुताबिक निर्वाचन आयो के आदेशानुसार 45 दिन के बाद इसकी कार्यवाही की जाएगी। जिसके अंतर्गत ईवीएम में संग्रहित डाटा डिलीट और वीवीपेट की स्लीपों को थ्रेसर में डालकर नष्ट की जाएंगी। प्रत्येक जिला स्तर पर जहां ईवीएम रखे गए हैं, वहीं इसके डाटा नष्ट करने की कार्यवाही की जाएगी। बाद में डाटा विहीन ईवीएम और वीवीपेट को सुरक्षति जगहों पर रख दी जाएंगी। गौरतलब राजकोट जिले समेत सौराष्ट्र की 48 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में 1.14 करोड़ मतदाता पंजीकृत हैं।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, एवं 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष सचीन रेल्वे स्टेश के पास, सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **Tc.No. : GUJHIN00722**, E-mail: krantisamay@gmail.com